

भाषा भारती

राजभाषा उन्नयन की वार्षिक पत्रिका

अंक 7, वर्ष 7, फरवरी 2020



राजभाषा प्रकोष्ठ
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
सागर (मध्यप्रदेश)

महात्मा गाँधी की पत्रकारिता के मायने

—पंकज सिंह

“पत्रकारिता का ध्येय सेवा होना चाहिए। समाचारपत्रों के पास बड़ी भारी शक्ति है, लेकिन जिस प्रकार अनियंत्रित बाढ़ का पानी पूरी बस्तियों को डुबा देता है और फसलों को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार अनियंत्रित लेखनी की सेवा भी विनाशकारी होती है। यदि उसका नियंत्रण बाहर से किया जाए तो वह नियंत्रणहीनता से भी अधिक अनिष्टकर सिद्ध होता है। प्रेस का नियंत्रण तभी लाभकारी हो सकता है जब प्रेस उसे स्वयं अपने ऊपर लागू करे। ‘अगर’ यह तर्क सही है तो दुनिया के कितने पत्र इस कसौटी पर खरा उतरेंगे?”

—महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी ने भारतीय संस्कृति पर इतनी अधिक दिशाओं में प्रभाव डाला है कि उनके समस्त अवदान का सम्यक् मूल्य निर्धारित करना अभी किसी के लिए सम्भव नहीं दिखता। खान-पान, रहन-सहन, भाव-विचार, भाषा और शैली, परिच्छद और परिधान, दर्शन और सामाजिक व्यवहार एवं धर्म-कर्म, राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीयता भारत में आज जो भी आचार या विचार प्रचलित हैं, उनमें से प्रत्येक पर कहीं-न-कहीं गाँधीजी की छाप है। यहाँ तक कि उनके आलोचकों और विरोधियों में भी ऐसे अनेक लोग हैं, जिनकी पोशाक नहीं तो खान-पान में विचार नहीं तो सामाजिक आचार में, महात्मा गाँधी का प्रभाव मौजूद है। महात्मा गाँधी विशुद्ध राजनीतिक विचारक नहीं थे। उनके चिंतन के केंद्र में मनुष्य का सर्वांगीण विकास था। राजनीति को उन्होंने नैतिकता के एक साधन के रूप में देखा और उसी रूप में अपनाया। उनकी यह विशिष्टता ही उन्हें आधुनिक युग के तमाम विचारकों से अलग कर देती है। वे सच्चे कर्मयोगी थे। व्यावहारिक जीवन में जो समस्याएँ समय-समय पर उनके सामने आईं, उनका समाधान करते हुए आगे बढ़ते गए। महात्मा गाँधी का संपूर्ण जीवन सत्य और अहिंसा के प्रयोगों का जीवन था। उन्होंने स्वतंत्रता एवं स्वराज्य के संघर्ष में सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा, असहयोग तथा सर्वोदय के नैतिक हथियारों का प्रयोग करके अपने जीवन-दर्शन का प्रारूप प्रस्तुत किया। गाँधी के चिंतन और विचारों का संसार इतना बड़ा है कि भारत सरकार ने सौ खण्डों (संपूर्ण गाँधी वाङ्मय) में उसे प्रकाशित किया है। गाँधीजी में संवाद तथा संप्रेषण की अद्भुत कला थी और वे जान चुके थे कि देश-विदेश के करोड़ों पाठकों, चिंतकों एवं स्वतंत्रता प्रेमियों तक समाचार-पत्र के माध्यम